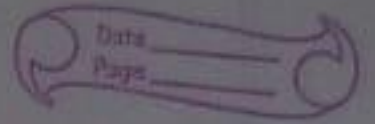


## Review - 2



Code - E-207

पुस्तक का नाम - जीवविज्ञान शिक्षण  
लेखक - डा० एस० पी० कुलकौठ  
डा० घमैन्द्र तोगर  
डा० सतीश कुमार गिल

परिलेखन - आर० लाल

गुण :->

- (1) इस पुस्तक में लेखक ने प्रायोजना विधि के बारे में विस्तारपूर्वक समझाया है।
- (2) इस पुस्तक में लेखक ने यह बताया है कि प्रायोजना विधि विभिन्न मनोवैज्ञानिको नियमों एवं सिद्धान्तों पर आधारित है।
- (3) प्रायोजना विधि एक कालकेन्द्रित विधि है।
- (4) इस पुस्तक में प्रायोजना विधि में छात्रों द्वारा स्वयं योजना बनाने तथा उसका क्रियान्वयन करने के कारण उनमें कार्य करने की तत्परता रहती है, जो कि प्रभावी अधिगम के लिये आती आवश्यक है।
- (5) इसके द्वारा छात्रों में श्रम करने की आह्वत का विकास होता है।
- (6) प्रायोजना विधि द्वारा छात्रों में स्वनात्मक तथा सूचनात्मक योग्यताओं का विकास होता है।
- (7) इस विधि द्वारा अर्जित ज्ञान स्थाई तथा दीर्घकालीन हो जाता है।

दोष  $\Rightarrow$  ① इस पुस्तक में लेखक ने यह बताया है कि व्याख्यान विधि मनोविज्ञान के सिद्धान्तों के प्रतिबन्ध है, क्योंकि इसमें छात्रों को कोई महत्व नहीं दिया जाता है। यह एक सूक श्रोता बना रहता है।

② यह अध्यापक केन्द्रित विधि है।

③ इस पुस्तक में यह बताया गया है कि व्याख्यान विधि स्मृति पर अधिक बल देती है।

④ व्याख्यान विधि से छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास नहीं हो पाता है।

⑤ इस विधि द्वारा छात्रों में स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास नहीं हो पाता है।

⑥ इस विधि द्वारा छात्रों में स्वतंत्र चिन्तन का विकास नहीं हो पाता है।

⑦ इस पुस्तक में यह बताया गया है कि व्याख्यान विधि में छात्रों की आवश्यकताओं, अनुभवों एवं रुचियों को कोई महत्व नहीं दिया जाता है।

सुझाव  $\Rightarrow$

(1) इस पुस्तक में लेखक के द्वारा प्रकरण को समझाने के लिये चित्रों का प्रयोग भी करना चाहिये।

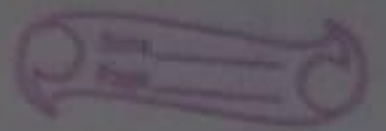
(2) इस पुस्तक में लेखक द्वारा कठिन शब्दों की जगह सरल शब्दों का प्रयोग करना चाहिये।

(3) इस पुस्तक में अधिक सरल भाषा-शैली का प्रयोग करना चाहिये, जिससे छात्र आसानी से समझ सकें।

(4) प्रस्तुत पुस्तक में अच्छे वैरायटी का कागज प्रयोग करना चाहिये।

(5) इस पुस्तक में लेखक को प्रस्तावना कौशल का प्रयोग करना चाहिये।

## Review - 1



Code - E-207

पुस्तक का नाम - जीव विज्ञान शिक्षण

लेखक - डा० स्व० पी० कुलश्रेष्ठ

डा० हरिन्द्र तोमर

डा० सतीश कुमार गिल

प्रकाशक - आर० जाल बुक डिप्टे

गुण 3

- ① इस पुस्तक में लेखक ने व्याख्यान विधि के बारे में विस्तार पूर्वक व्याख्या है।
- ② यह विधि आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक उपयोगी है, क्योंकि उन्में प्रयोग, उपरनि तथा अन्य सहायक सामग्री की आवश्यकता नहीं होती है।
- ③ इस पुस्तक में लेखक ने बताया है कि व्याख्यान विधि द्वारा एक ही अध्यापक द्वारा एक समय में बहुत बड़े समूह को भी पढ़ाया जा सकता है।
- ④ यह बहुत सरल, आकर्षक तथा तीव्र गति से चलने वाली विधि है।
- ⑤ यह विधि तथ्यात्मक ज्ञान एवं विज्ञान की ऐतिहासिक विवेचना हेतु सर्वोत्तम विधि है।
- ⑥ इस पुस्तक में लेखक ने यह बताया है कि इस विधि द्वारा शिक्षण करने पर समय बर्बाद नहीं होता है।
- ⑦ विज्ञान के नवीन प्रकरों का ज्ञान प्रदान करने तथा उनकी व्याख्या करने के लिये यह विधि उपयोगी है।

### दीप :-

- (1) इस पुस्तक में प्रयोजना विधि द्वारा शिक्षण करने पर समय तथा क्रम अधिक लगता है।
- (2) इस पुस्तक में लेखक कहता है कि विज्ञान में प्रत्येक प्रकार का प्रयोग को इस विधि द्वारा पढ़ाना सम्भव नहीं है।
- (3) प्रयोजना विधि अधिक रचनीय होती है।
- (4) इस पुस्तक में यह बताया गया है कि यदि प्रयोजना विधि का संचालन भली-भाँति न किया जाये तो इसमें कुछ ही हानि का प्रभुत्व हो जाता है।
- (5) इसके द्वारा शिक्षण करने पर अधिक वैज्ञानिक उपकरण, प्रयोगशाला तथा अन्य सहायक और सन्दर्भ सामग्री की आवश्यकता होती है।

### सुझाव :-

- (1) इस पुस्तक में लेखक द्वारा कठिन शब्दों के स्थान पर सरल शब्दों का प्रयोग करना चाहिये।
- (2) इस पुस्तक में प्रकारों को ठीक प्रकार से समझाने के लिये और अधिक चित्रों का प्रयोग करना चाहिये।
- (3) इस पुस्तक में परिभाषाओं को और उचित ढंग से प्रस्तुत करना चाहिये।
- (4) इस पुस्तक के प्रश्न मॉडल होने चाहिये तथा पुस्तक अधिक समय तक प्रयोग की जा सके।
- (5) इस पुस्तक का श्रेष्ठ स्वरूप अधिक अक्षरों में होना चाहिये।